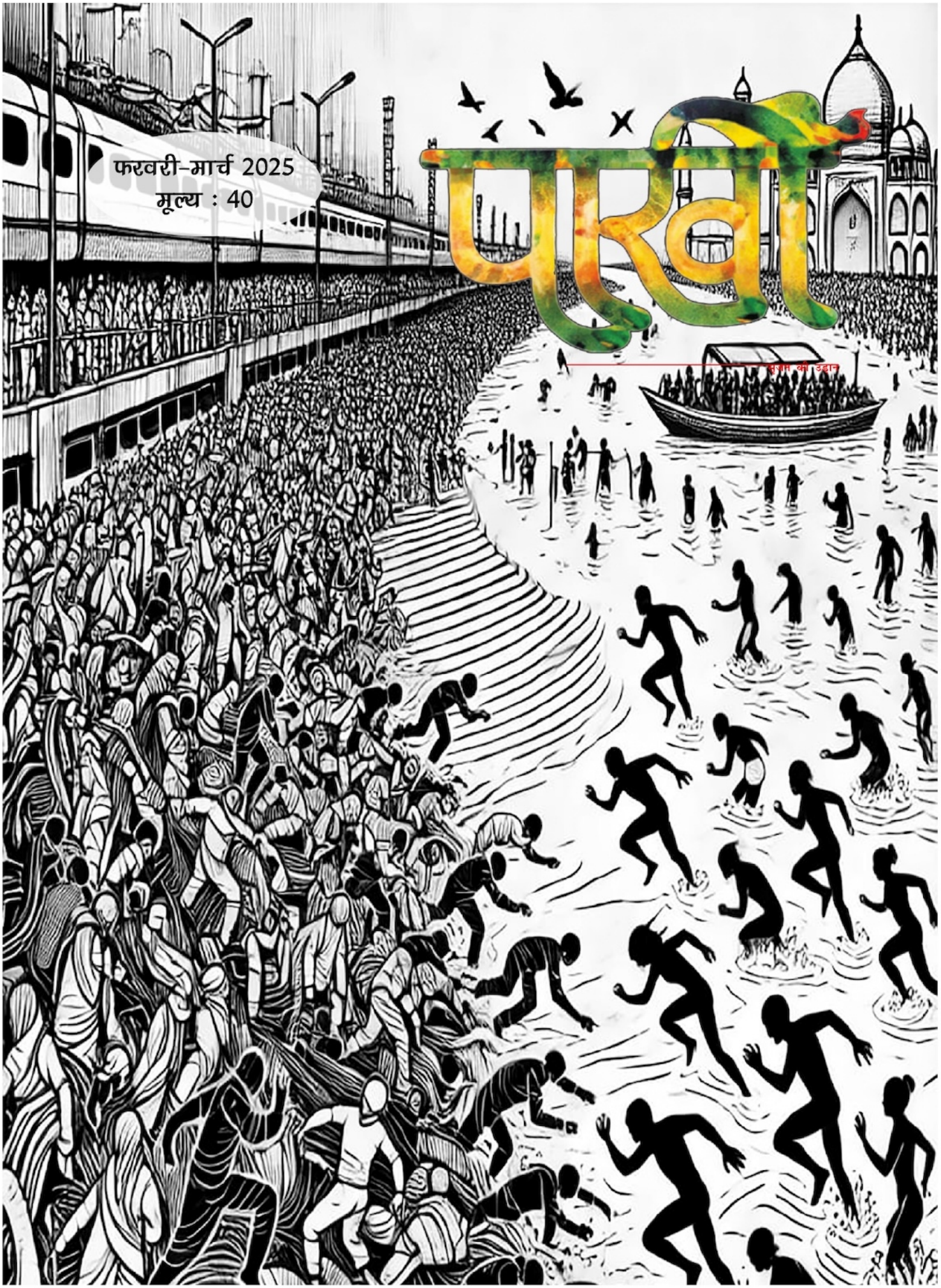

पाखी

की उड़ान

फरवरी-मार्च 2025

मूल्य : 40

संपादक
अपूर्व

महाप्रबंधक
अमित कुमार

वर्ष : 17, अंक 5, फरवरी-मार्च, 2025 (संयु.)

आवरण पृष्ठ : जनार्दन कुमार सिंह
रेखाचित्र : मार्टिन जॉन

मूल्य :

प्रति	:	रु. 40.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं।
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

प्रकाशक
इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.com/pakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय।
स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

अनुक्रमणिका

चिट्ठी आई है

संपादकीय/अपूर्व

चौतरफा विष की बरसात 6

कहानियां

सत की जीत : संजय कुमार सिंह 8
कतरनें : डॉ. अमिता प्रकाश 13
कोल्ड कॉफी : लता हिराणी 16
दस लाख का बकरा : राकेश कुमार सिंह 20
'वी वैल्कमयू' : प्रो. कृष्णा अग्निहोत्री 25
चश्मा : सुशांत सुप्रिय 29
भीगना : दयानंद पांडेय 33
रास्ते : महावीर रवांल्टा 37

कविताएं

शंकरानंद 43
अंजना वर्मा 46
अखिलेश जायसवाल 49
मुख्तार अहमद 53
यश मालवीय 55

मूल्यांकन

जीवन जीवन की तलाश में : डॉ. राकेश कुमार सिंह 57
किस्सागोई का कौतुक देती कहानियां : सुषमा मुनींद्र 62
अमृतकाल में किसानों के नरक : सूरज पालीवाल 64
'ठाकुरबाड़ी' वृत्तांत : डॉ. कुमारी उर्वशी 68
एक कथाकार के कबाड़खाने से निकला जखीरा : प्रेम शशांक 71

विमर्श-सामयिक

गंगा जमुनी तहजीब में निबद्ध राष्ट्रवाद : राजेंद्र राजन 74

समसामयिक : वेलेंनटाइन डे विशेष

श्मशान को लिखा गया प्रेम पत्र : डॉ. चित्तरंजन कुमार 79

स्थाई स्तंभ

मतभेद

चुनाव आयोग ने बढ़ाया संकट : मदन कश्यप 81

सत्याग्रह

अपने समाज में अजनबी बनते हम : प्रियदर्शन 82

कथा-मीमांसा

असाधारण चरित्रों की निर्मिति (उमा शंकर चौधरी की कहानियां) : पंकज शर्मा 84

सतरंगी कोना

लोकमानस की आलोकित ऊर्जा का सम्पुट : किरण सूद 88

प्रति संसार

साहित्य और कला के नायक : अर्पण कुमार 91

द पर्पल पॉइंट

एक देखा तार जग का : शोभा अक्षर 94

देह का आकाश : एक नजर

'पाखी' पत्रिका के जनवरी 2025 के अंक में 'द पर्पल प्वाइंट' कॉलम के अंतर्गत शोभा अक्षर का लेख 'देह का आकाश' प्रकाशित हुआ है। देह की बात होती है तो स्त्री की बात होती है, अश्लीलता, नग्नता, अर्धनग्नता के सारे मुद्दे स्त्री से ही जुड़े हैं। पुरुष देह का अश्लीलता और नग्नता से सम्बंध नहीं है।

स्त्री के रूप का सौंदर्य लुभावना है पर उसके देह की नग्नता या अर्द्ध नग्नता अश्लीलता में बदल जाती है। आश्चर्य नहीं कि इस बोल्ड सब्जेक्ट पर लिखना भी स्त्री की अश्लीलता के समर्थन के पक्ष में खड़ा होना ही मान लिया जाए पर यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि मानसिक रुग्णता के शिकार वर्तमान समाज में इस विषय पर लेखन की अनिवार्यता असंदिग्ध है। 'पर्दे में रहने दो' वाले इस छद्म नैतिकतावादी समाज में पर्दे के पीछे सब स्वीकार्य है।

फ्रांसीसी लेखक सिमोन द बुआ कहती हैं कि स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती हैं। स्वत: स्पष्ट है कि स्त्री के साथ साथ पैमाने भी गढ़े जाते हैं। इस विषय पर साहित्य या सिनेमा ने भी कमर्शियल नजरिये का उपयोग कर अपना बिजनेस तो किया पर जागरूकता पैदा नहीं कर सके, सम्भवत: मंशा भी नहीं रही होगी। सत्तर और उसके बाद के दशकों में तमाम फिल्मों की नायिकाएं निशाने पर रहीं। 'बॉबी' की डिंपल कपाड़िया, 'राम तेरी गंगा मैली' की मंदाकिनी, 'जिस्म' की मल्लिका सहरावत जैसी अभिनेत्रियों को बाजार ने बिकाऊ वस्तु की तरह उपयोग किया।

साहित्य और सिनेमा के साथ कला के क्षेत्र में मंदिरों की दीवारों पर स्त्री की नग्न, अर्द्धनग्न देह की मूर्तियों के निर्माण के मनोवैज्ञानिक उद्देश्य को समझने की आवश्यकता है। भाषा की बात तो और भी विचित्र है।

शोभा अक्षर लिखती हैं, 'पुरुषों की अश्लीलता पर पितृसत्ता के डोमिनेंस की वजह से लगभग नहीं के बराबर बात होती है।'

देह और उसके सौंदर्य से सम्बंधित मानक पुरुषों द्वारा तय किए गए हैं। स्त्री एक आब्जेक्ट यानी वस्तु है। हम जिस समाज में रहते हैं, उसकी मूल अवधारणा यही है। जब हम इस बात को समझ लेते हैं तो सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। यह बात दीगर है कि कलात्मक अभिव्यक्ति अगर नग्नता अथवा अर्द्धनग्नता की मांग करती है तो वह अपरिहार्य है। मां की छाती से चिपका हुआ दूध पीता बच्चा इस धरती पर सबसे सुंदर दृश्य है।

ओशो को भारत का सिग्मंड फ्रायड कहा जा सकता है। वे मूलत: एक मनोवैज्ञानिक दार्शनिक थे और उन्होंने विभिन्न विषयों पर विचार प्रकट किए, पर सेक्स पर उनके विचारों को ही ज्यादा प्रचारित किया गया। ओशो 'नये भारत की खोज' में प्रेम और विवाह पर अपने विचार देते हुए कहते हैं, ''जब तक कोई समाज अरेंज मैरिज, बिना प्रेम के और सामाजिक व्यवस्था से करना चाहेगा, तब तक वह समाज दहेज से मुक्त नहीं हो सकता। प्रेम के अतिरिक्त विवाह का और कोई भी कारण होगा, तो दहेज किसी न किसी रूप में जारी रहेगा।''

एम.एफ. हुसैन द्वारा बनाए गए सरस्वती के चित्र पर अश्लीलता का आरोप लगाया गया और उन्हें देश छोड़ देना पड़ा। महात्मा गांधी 'My Experiments With Truth' के कारण विवादों के घेरे में रहे।

कई विद्वानों, दार्शनिकों, साहित्यकारों के विचारों को उद्धृत करते हुए लेखिका ने इसकी तह तक जाने की कोशिश की है। वर्तमान परिदृश्य चिंताजनक है। टेक्नोलॉजी के दुरुपयोग ने स्त्री के शोषण का नया तरीका ईजाद कर दिया है। लेखिका लिखती हैं, 'अश्लील फोटो, अश्लील वीडियो आदि वाली धमकियों से डरी हुई पीढ़ी से क्या उम्मीद करेंगे?' कैसे करेंगे? यह स्त्री सशक्तिकरण के साथ स्त्री शोषण के सशक्तिकरण का भी काल है।'

फिर क्या करेंगे? सिर्फ विरोध से बात नहीं बनेगी। हस्तक्षेप समय की मांग है। हस्तक्षेप का सर्वश्रेष्ठ तरीका जागरूकता पैदा करना ही हो सकता है। शोभा अक्षर ने अपने श्रमसाध्य आलेख के माध्यम से यह महत्वपूर्ण कार्य किया है। वैसे ही देर हो चुकी है, इतिहास स्त्रियों के प्रति बर्बर रहा है, भविष्य के लिए उम्मीदें बचानी है।

'महान चित्रकार यहां से निकलेगा? महान वैज्ञानिक यहां से निकलेगा? महान साहित्यकार इस फूहड़ वातावरण से निकलेगा?' यह बेचैनी और चिंता भविष्य के लिए उम्मीदों को बचाने की चिंता है। इस पर शमशेर बहादुर सिंह की कुछ लाइनें-

'वह सलोना जिस्म/गुनगुनाता भी सलोना जिस्म वह-
जागता भी, मौन सोता भी/न जाने
एक दुनिया की उम्मीद - सा/किस तरह!'

डॉ. उषा कुमारी, पटना, बिहार